सिनेमा

एक यादगार फिल्म

सुनील मिश्र

चरणदास चोर

विजयदान देथा की राजस्थानी लोक-कथा संग्रह की एक कहानी पर आधारित

बचपन में देखी इस फिल्म को कभी नहीं भुला पाया। अक्सर गणेश और दुर्गा उत्सवों पर फिल्में दिखाई जाती थीं। यह बात होगी 1976-77 के आसपास की। उस समय *सत्यकाम, जागृति, चरणदास चोर* जैसी फिल्में सड़कों पर खूब दिखाई जाती थीं। चरणदास चोर को मैंने कई-कई बार सड़क-मैदान में बैठकर देखा। और वो हमेशा याद रही।

इस फिल्म के निदेशक हैं श्याम बेनेगल। वे हमारे देश के एक बड़े फिल्मकार माने जाते हैं। चरणदास चोर एक चोर की कहानी है। एक बार वह पुलिस से बचने एक साधु के दरबार में पहुँचता है। वहीं साधु को चरणदास गुरू बनाता है और पाँच वचन देता है। इनमें से चार वचन हैं – सोने-चाँदी की थाली में खाना नहीं खाऊँगा; हाथी-घोड़े के जुलूस में सवारी नहीं करूँगा; कोई रानी शादी करना चाहेगी तो इंकार कर दूँगा; कोई राजा बनाना चाहेगा तो नहीं बनूँगा। ये चार वचन वह यह सोच कर देता है कि उसके जीवन में ऐसे अवसर कभी नहीं आएँगे ही नहीं। साधु चरणदास चोर की बातों पर हँसता है और कहता है कि ये बातें तो तेरे जीवन में कहाँ होने वाली हैं? मेरी तरफ से एक वचन ले कि तू चोरी करना छोड़ देना। इस पर चरणदास कहता है कि गुरूदेव वो तो मेरा धन्धा है। यदि चोरी छोड़ दूँगा तो खाऊँगा क्या? फिर कुछ सोचकर वो हमेशा सच बोलने का पाँचवाँ वचन देता है।

अब चरणदास चोर सच्चा बोलकर अपनी यात्रा शुरू करता है। उसके साथ उसका एक शागिर्द बुद्धू धोबी भी है। दोनों मिलकर गाँव भर में खूब चोरियाँ करते हैं और लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। वे अमीरों से लूटकर गरीबों में बाँटते हैं। उनका जीवन इसी तरह चलता है। एक बार वे राजमहल का रुख करते हैं। बुद्धू धोबी की मदद से चरणदास राजमहल में वेश बदलकर जाता है और शाही खज़ाने से अपनी ज़रूरत की मुताबिक पाँच स्वर्ण मुद्राएँ चुरा लेता है। इसी बीच राजमहल का कर्मचारी शाही खज़ाने से पाँच मुद्राएँ चुराकर अपने पास रख लेता है। इसका इल्ज़ाम भी वह चरणदास पर लगाता है। आखिरकार चरणदास को राजमहल में बुलाया जाता है। वहाँ वह सहजता से पाँच स्वर्ण मुद्राएँ चुराना कबूल कर लेता है। सच्चाई सामने आती है और पाँच मुद्राएँ चुराने वाले कर्मचारी को सज़ा हो जाती है।

रानी केलावती चरणदास चोर की सच्चाई से प्रभावित होती है। वो उसको जुलूस भेजकर बुलाती है, सोने-चाँदी की थाली में भोजन देती है, राजा बनाना चाहती है और आखिर में शादी का प्रस्ताव रखती है। चरणदास ने तो इन सभी चीज़ों को न करने का वचन लिया है। इसीलिए वह सारी बातों को ठुकरा देता है। अब रानी गुस्से में आकर चरणदास चोर को मार डालने का हुक्म देती है। सिपाही रानी के हुक्म का पालन करते हैं। चरणदास चोर को मार दिया जाता है। मरने के बाद चरणदास यमराज के दरबार में पहुँचता है। उसके पीछे-पीछे बुद्धू धोबी भी। बुद्धू चित्रगुप्त के बहीखाते में हेराफेरी कर और ऐसी चाल चलता है कि उसे वापस ज़मीन पर भेज दिया जाता है। उसका हाथ पकड़े चरणदास भी ज़मीन पर आ जाता है। दोनों फिर अपने काम में जुट जाते हैं।

यह फिल्म एक राजस्थानी लोककथा को आधार बनाकर रची गई है। इसके लेखक विजयदांन देथा हैं। प्रख्यात नाटककार हबीब तनवीर ने इस कहानी को छत्तीसगढ़ी बोली में रूपान्तरित किया है। छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों के साथ इस पर बना नाटक पिछले चालीस सालों से खेला जा रहा है। चोरी और सच्चाई दोनों में गहरा विरोधाभास है मगर इस फिल्म में हम दोनों ही चीज़ों को साथ-साथ देखते हैं।

सभी फोटोः साभार *बाल चित्र समिति*

चरणदास चोर के बारे में
श्याम बेनेगल

चरणदास चोर, मेरी शुरुआती फिल्मों में से एक थी। बड़ी दिलचस्प फिल्म है। अविभाजित मध्यप्रदेश और आज के छत्तीसगढ़ में मैंने बनाई थी। शमा ज़ैदी और हबीब तनवीर ने इस फिल्म के निर्माण में बड़ा सहयोग किया था। तुमको आश्चर्य होगा यह जानकर कि यह फिल्म मैंने लगभग एक लाख रुपए में बना ली थी। *बाल चित्र समिति* वाले चाहते थे कि मैं उन्हें दस-पन्द्रह मिनट की लघु फिल्म बनाकर दूँ। मगर मैंने उनसे कहा कि यह फिल्म इतनी छोटी बन ही नहीं सकती। उन्होंने कहा कि बजट सीमित है तो मैंने कहा कि इसी बजट में बनेगी मगर बड़ी फिल्म होगी।

इस फिल्म को बड़ी तैयारियों के साथ बनाया गया था। छत्तीसगढ़ के नाचा कलाकारों के तमाम ग्रुप हमने बुला लिए थे भिलाई, राजनान्दगाँव से। वहाँ की लोकनृत्य और लोकगायन विधा को भी इस फिल्म में शामिल किया गया। कुछ कलाकारों को चुनकर इस फिल्म के लिए तैयार किया गया। सबने बहुत अच्छा काम किया। यह फिल्म बहुत कम समय में बन गई, शायद एक महीने के भीतर ही।

लालूराम इसमें चरणदास चोर बने थे। वे नाचा के श्रेष्ठ कलाकार थे।

चरणदास चोर के बारे में
हबीब तनवीर

मैं श्याम बेनेगल को एक चोर की राजस्थानी कहानी के आधार पर एक नाटक बनाने के बारे में बता रहा था। कहानी सुनकर उन्होंने फैसला किया कि वे इस पर एक फिल्म बनाएँगे। श्याम ने मुझसे स्क्रीन प्ले लिखने के लिए कहा। फिल्म वह बना रहे थे *चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी* की तरफ से बच्चों के लिए! चुनाँचे उन्हें कहानी का अन्त पसन्द नहीं था। चोर के मरने पर वे फिल्म खत्म नहीं करना चाहते थे। उनका कहना था कि बच्चों के लिए कहानी का यह अन्त अच्छा नहीं है। उनका कहना था कि चोर के मरने के बाद परलोक का एक सीन और लिखो ताकि इस दुखद अन्त की बजाय चोर की कहानी आखिर तक एक प्रहसन बनी रहे। हालाँकि बच्चों के बारे में मेरी राय जुदा थी। मैंने परलोक का सीन भी लिख लिया – मरने के बाद चरणदास चित्रगुप्त के सामने पहुँचता है साथ में बुद्धू भी है। बुद्धू चुपके से उसके खाते से अपने नाम का पन्ना फाड़ देता है। जब चित्रगुप्त अपने खाते का पन्ना गायब देखकर चरणदास पर शक की नज़र डालते हैं तो बुद्धू उस कागज़ को पान की तरह लपेटकर मुँह में डाल लेता है। लाचार चित्रगुप्त पूछते हैं, "यमराज ने तुमको क्यों मारा? तुम्हारा नाम तो मेरे खाते में नहीं है।" इतने में भैंसे पर सवार यमराज खुद आ जाते हैं। मौका देखकर चरणदास और बुद्धू भैंसे पर चढ़कर चम्पत हो जाते हैं। शाम के बादल मँडराते नज़र आते है। कमेंटरी के शब्द जो सुनने में आते हैं वे ये हैं: *बच्चो, वह जो बादल तुम देख रहे हो वह दरअसल चरणदास चोर है जो यमराज के भैंसे पर सवार भागा जा रहा है। उसके पीछे असमानी पुलिस है जो अब तक उसका पीछा कर रही है।*